समर कैम्प का विद्यार्थियों के सीखने पर प्रभाव

मुनीर

बच्चे हमेशा समर कैम्प यानी ग्रीष्मकालीन शिविर में भाग लेने के लिए उत्साहित और उत्सुक रहते हैं। हम यहाँ उन समर कैम्पों के बारे में बात कर रहे हैं जो वार्षिक परीक्षाओं के ठीक बाद या गर्मी की छुट्टियों में बच्चों को शाला से जोड़े रखने, खेल-खेल में सीखने का अवसर देने के उद्देश्य से किए गए थे। इस लेख में, विभिन्न राज्यों में आयोजित समर कैम्पों के अनुभवों के आधार पर उनकी उपयोगिता को समझने, उन्हें आयोजित करने का तरीक़ा जानने, और उनके माध्यम से बच्चों के सीखने के प्रतिफलों का आकलन करने का प्रयास किया गया है।

समर कैम्प का ज़िक्र आते ही मन में अनेक चित्र उभरते हैं। पिछले कुछ सालों में सरकारी स्कूलों के शिक्षक समर कैम्प के आयोजन के लिए विशेष प्रयास कर रहे हैं। कई राज्यों में शिक्षकों ने गर्मी की छुट्टियों से ठीक पहले बच्चों के लिए समर कैम्प लगाना शुरू किया है जिसके नतीजे काफ़ी सकारात्मक रहे हैं। इनमें से कई जगहों पर शिक्षकों ने इन समर कैम्पों का आयोजन स्वैच्छिक रूप से किया जिनके सकारात्मक प्रभावों को देखते हुए शिक्षा विभाग ने इसे एक बड़े पैमाने पर उचित तैयारियों के साथ करना सुनिश्चित किया। आँकड़ों की मानें तो समर कैम्प में हिस्सा लेने वाले बच्चों की संख्या लगातार बढ़ रही है। अगर सिर्फ़ छत्तीसगढ़ की बात करें तो राज्य के 9 ज़िलों में जहाँ अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रहा है, वहाँ पिछले दो सालों में कम-से-कम 4,500 शिक्षकों ने स्वैच्छिक तौर पर 2,484 स्कूलों के 39,000 विद्यार्थियों के लिए 2,125 समर कैम्प आयोजित किए।

चित्र 1: ख़ुद की हथेलियों की छाप को अपनी कल्पना का आकार देता विद्यार्थी

मेरे विचार से, शिक्षकों की इस स्वैच्छिक भागीदारी के पीछे सबसे पहला कारण यह था कि यह विचार आकर्षक और प्रभावी था तथा अभिभावकों सहित सभी हितधारक समर कैम्प के दौरान स्कूलों में ठोस परिणाम देख सकते थे। दूसरे, शिक्षक अपनी शिक्षण प्रक्रियाओं का आत्मनिरीक्षण करने को लेकर काफ़ी आत्मविश्वासी थे और उन्हें अपने विद्यार्थियों की ज़रूरतों के आधार पर यह चयन करने की स्वतंत्रता थी कि क्या और कैसे पढ़ाना है, चाहे विद्यार्थी किसी भी कक्षा या आयु के हों।

समर कैम्प इसलिए भी ख़ास होते हैं क्योंकि शिक्षक अपने विद्यार्थियों को बेहतर तरीक़े से सीखने में मदद करने के लिए नए और रोमांचक तरीक़े आज़माते हैं। वह उन तरीक़ों को चुनते हैं जो उन्हें लगता है कि उनके विद्यार्थियों की ज़रूरतों के लिए सबसे उपयुक्त हैं। हमने जिन शिक्षकों के साथ मिलकर ग्रीष्मकालीन शिविर आयोजित किए थे, उनके साथ हमने तीन मूलभूत प्रश्नों पर चर्चा की :

1. कक्षाओं के स्तर पर बँधे-बँधाए तयशुदा खाँचों से इतर समर कैम्प में शामिल होने वाले बच्चों के सीखने का वर्तमान स्तर क्या है?
2. समर कैम्प के लिए कौन-सी विषयवस्तु, शिक्षण-अधिगम सामग्री (टीएलएम) और गतिविधियों का चयन करें जो उनकी कक्षा के बच्चों के सीखने के स्तर के लिए उपयुक्त हों एवं उनके बच्चों की आवश्यकताओं / चुनौतियों पर कार्य करने और उनके सीखने को बेहतर करने में मददगार हों।
3. अवकाश के बाद स्कूल खुलने पर शिविर के किन पहलुओं को उनके शिक्षण अभ्यास के अभिन्न अंग के रूप में आगे बढ़ाया जा सकता है?

चित्र 2 : अपने बनाए हुए चित्र दिखाते हुए विद्यार्थी

शिक्षकों के लिए फ़ायदेमन्द

समर कैम्प का आयोजन शिक्षकों के लिए किया जाता है ताकि वह अपने अभ्यासों पर विचार कर सकें, और ऐसी रणनीतियाँ तलाश सकें जो बच्चों की शिक्षा पर बेहतर प्रभाव डाल सकें। चूँकि यह जुड़ाव स्वैच्छिक है और पाठ्यक्रम पूरा करने की बजाय सीखने पर केन्द्रित है, इसलिए इसमें आत्मनिरीक्षण और सुधार की ज़्यादा गुंजाइश है।

शिक्षकों को आकलन की बेहतर समझ प्राप्त हुई

बच्चों के आकलन और सुझाई गई गतिविधियों को अपनाने के बारे में शिक्षकों के विचार अलग-अलग थे। लेकिन अधिकांश शिक्षक इस बात पर सहमत थे कि सीखने के स्तर में सुधार के लिए बच्चों की वर्तमान क्षमताओं का आकलन करना, और एससीईआरटी / एनसीईआरटी के सीखने के प्रतिफलों और अनुशंसित शिक्षण पद्धति के आधार पर शिक्षण प्रथाओं का मूल्यांकन करना ज़रूरी है। हालाँकि शिक्षक अभी भी सीखने के प्रतिफलों को पूरी तरह से नहीं समझ पाए हैं, लेकिन हाल के प्रशिक्षण कार्यक्रमों ने उन्हें इस अवधारणा से भली-भाँति परिचित करा दिया है, और वह अब इसे अपने शब्दों में व्यक्त करने का प्रयास कर रहे हैं। कई कैम्पों में शिक्षकों ने इस ढाँचे के आधार पर मानसिक मानचित्र (माइंड मैप) या क्रियान्वयन की योजनाएँ बनाईं। शिक्षक शिक्षण केन्द्रों (टीएलसी) और क्लस्टर एवं ब्लॉक संसाधन केन्द्रों में उन्मुखीकरण सत्र हुए। इन सत्रों में शिविर के उद्देश्य, रूपरेखा एवं चरणबद्ध दिनवार योजना पर चर्चा हुई। इस चर्चा में क्लस्टर, ब्लॉक और ज़िला पदाधिकारी शामिल हुए और उन्होंने शिविर की परिकल्पना में अपने विचार भी रखे और सहयोग भी किया।

तालिका 1 : आकलन के लिए संकेतक और दिशा-निर्देश

क्रम सं.	बच्चों से क्या सीखने की अपेक्षा की जाती है?	कौन-सी गतिविधियाँ इसे प्राप्त करने में मदद कर सकती हैं?	मुझे कौन-से अभ्यास करने चाहिए?

ऊपर दी गई तालिका शिक्षण पद्धतियों के लिए एक स्व-आकलन उपकरण के रूप में कार्य करती है, और बच्चों के सीखने के स्तर को दर्शाती है। इससे शिक्षकों को केवल पाठ्यक्रम पूरा

करने की बजाय बच्चों के स्तर से ही शुरू करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। मुझे याद है कि एक व्हाट्सएप समूह में दो शिक्षकों ने एक वरिष्ठ शिक्षक की इस बात के लिए प्रशंसा की थी कि उन्होंने कैम्प में सर्कल टाइम के दौरान बालगीत को पहली बार अभिनय और हाव-भाव के साथ सुनाने का प्रयास किया। इससे न केवल उन शिक्षकों की शिक्षण प्रक्रिया में बदलाव आया, बल्कि बालगीत करवाने को लेकर उनकी स्वयं की धारणाओं में भी परिवर्तन हुए।

शिक्षकों ने बेहतर अभ्यासों को अपनाया

कई शिक्षक अब अपनी कक्षाओं में कविताएँ, अभिनय और पोस्टर शामिल कर रहे हैं, और इन उपकरणों के साथ पढ़ने और लिखने की ओर प्रगति कर रहे हैं। अकेले बेमेतरा ज़िले के बेरला ब्लॉक में, 43 से अधिक शिक्षक हर हफ़्ते कम-से-कम एक कहानी सुनाने के लिए कठपुतलियों का इस्तेमाल करते हैं।

समर कैम्प को आयोजित करने वाले अधिकांश शिक्षकों का उद्देश्य था कि इस कैम्प में विद्यार्थियों को भरपूर आनन्द आए और वह यहाँ होने वाली रोचक गतिविधियों के ज़रिए भाषा, गणित और अन्य विषयों के बुनियादी कौशल को सीख सकें। ज़्यादातर शिक्षकों को इस तरह के निःशुल्क शिविर लगाने में गर्व का अनुभव हुआ। आमतौर पर इन शिविरों पर आने वाली लागत कम-से-कम 5,000 रुपए होती है। यह अवसर अकसर निजी स्कूलों में ही उपलब्ध होता है। लेकिन जब शिक्षकों के प्रयासों से सरकारी स्कूलों में ये शिविर आयोजित हुए तो माता-पिता और बच्चों में अलग तरह की ख़ुशी और सन्तुष्टि दिखी।

चित्र 3 : समर कैम्प में समूह गतिविधि के दौरान चार्ट पर डिज़ाइन बनाते विद्यार्थी

चित्र 4 : समर कैम्प में अलग-अलग आकार की आकृतियों को जोड़कर मॉडल बनाने का आनन्द

कई शिक्षकों ने बच्चों को बातचीत और लेखन के ज़रिए अपने विचार साझा करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने बच्चों के द्वारा लिखी रचनाओं, बनाए हुए चित्रों को दीवार पत्रिका में, प्रातःकालीन सभा की सामग्री के रूप में संकलित किया। इसके अलावा, शिक्षकों ने अपने विद्यार्थियों को ग़लतियों की चिन्ता किए बिना निडर होकर लिखने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने वह रचनाएँ कुछ पत्रिकाओं और समाचार पत्रों के साथ साझा कीं, और काफ़ी बच्चों की रचनाएँ अख़बारों, बाल पत्रिकाओं में प्रकाशित भी हुईं। ज़्यादातर शिक्षकों ने बच्चों को पढ़ने और लिखने के लिए प्रेरित करने के लिए कविताओं और बालगीत का इस्तेमाल करना शुरू कर दिया। शिक्षकों ने अपने कार्यकलापों और विद्यार्थियों के सीखने के प्रतिफलों में सुधार को ध्यान से देखना और उसे नोट करना भी शुरू किया।

समर कैम्पों का विस्तार

हम अवकाश के दौरान उन शिक्षकों के साथ समर कैम्प जारी रख सकते हैं जो अपने विद्यार्थियों को कक्षा-स्तरीय दक्षताएँ और कुछ दूसरे उच्च-स्तरीय कौशल सिखाना चाहते हैं। वैसे देखा जाए तो असली चुनौती कुछ और ही है। आँकड़ों से पता चलता है कि परीक्षाओं के बाद और गर्मियों की छुट्टी से पहले बहुत सारे बच्चे स्कूल नहीं आते। मैंने जिन स्कूलों का दौरा किया है, उनमें देखा है कि इस दौरान केवल 25-40 प्रतिशत विद्यार्थी ही स्कूल आते हैं। दूसरी ओर, कई बच्चे छुट्टियों के बावजूद समर कैम्प में शामिल होने के लिए उत्साहित थे। उपस्थिति में कमी का एक मुख्य कारण कक्षा में नियोजित गतिविधियों की कमी है। परीक्षा के बाद शिक्षक अकसर उत्तर-पुस्तिकाओं को जाँचने / ग्रेड करने पर ध्यान देने लगते हैं। इससे बच्चों को लगता है कि स्कूल का सत्र समाप्त हो गया है। लेकिन यह अनुभव किया गया है कि अगर पाठ और शिक्षण की गतिविधियाँ दिलचस्प और मज़ेदार हैं तो बच्चे स्कूल आने और सीखने के लिए उत्साहित होंगे। वह जीवन्त, रुचिकर और सार्थक सीखने के माहौल का बेसब्री से इन्तज़ार करते हैं।

समर कैम्पों से हमें जो भी अनुभव मिले हैं, वह बताते हैं कि आकलन से शिक्षण विधियों में सुधार होता है और अन्ततः यह सीखने को प्रभावित करता है। वार्षिक परीक्षाओं के बाद और गर्मियों की छुट्टी से पहले स्कूलों में मिलने वाले 15–25 दिनों का लाभ उठाना अच्छा होता है। इस विचार को क्रियान्वित करने के लिए, हमें बच्चों की वार्षिक परीक्षाओं में उनके उत्तरों का विश्लेषण करना ज़रूरी है। बच्चों को जहाँ परेशानी हो रही है ऐसी जगहों (अवधारणाओं) की पहचान करना और दक्षताओं में अन्तर को पाटने के लिए वांछित शिक्षण पद्धतियों की सूची बनाना एक अच्छा प्रयास हो सकता है। यदि हम ऐसा करने में सफल होते हैं तो हम विशिष्ट प्रतिफल और पद्धतियों को प्राप्त करने के लिए समयबद्ध अभियान चला सकते हैं। शिक्षकों के रूप में, आइए, हम ख़ुद से दो सवाल पूछें।

1. वार्षिक परीक्षा के तुरन्त बाद और स्कूल बन्द होने से पहले जो 15–20 दिन का समय है उसका बेहतर उपयोग बच्चों के सीखने के लिए कैसे करना चाहिए एवं इसकी एक ठोस योजना कैसे बनाई जानी चाहिए।
2. बच्चों द्वारा वार्षिक परीक्षा में दिए गए उत्तरों से मैं कौन-सी 'समस्याग्रस्त' दक्षताओं का पता लगा सकता / सकती हूँ जिन पर मैं इस दौरान काम कर सकूँ?

वार्षिक परीक्षाओं से प्राप्त जानकारी का इस्तेमाल करना

मेरे विचार में, बुनियादी साक्षरता और संख्या-ज्ञान (एफ़एलएन) और ग्रेड स्तर की दक्षताओं को बड़े पैमाने पर प्राप्त करने तथा अपने ख़ुद के अभ्यासों में सुधार करने के लिए हमें नियमित रूप से आकलन करना चाहिए। आकलन करने के लिए तालिका 2 में दिखाए गए ढाँचे का इस्तेमाल कर सकते हैं, और कार्य करने के लिए समयबद्ध कार्ययोजना बना सकते हैं।

तालिका 2

क्र. सं.	विद्यार्थी	प्रश्न 1	प्रश्न 2	प्रश्न 3	प्रश्न 4	प्रश्न 5
1	अमल	हाँ	हाँ	हाँ	नहीं	हाँ
2	अनामिका	हाँ	हाँ	नहीं	नहीं	हाँ
3	हफ़ीफ़ा	नहीं	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं
4	जोसेफ़	नहीं	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं
5	निकिता	नहीं	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं

आइए, इस समस्या को समझने के लिए ज़मीनी स्तर से कुछ उदाहरण लें। इससे हमें इस मुद्दे के समाधान के लिए उपयुक्त तरीक़े, सामग्री और गतिविधियाँ विकसित करने में मदद मिलेगी। अर्ध-वार्षिक परीक्षा में, कक्षा V के हिन्दी पेपर में एक सवाल था जिसमें मैसूर के दशहरा उत्सव का वर्णन करना था। इस उत्सव के बारे में विद्यार्थियों ने एक अध्याय में पढ़ा था। यूँ तो यह सवाल आंशिक रूप से स्मृति-आधारित है, लेकिन यह विद्यार्थियों की पाठ को समझने की क्षमता का भी आकलन करता है। वह केवल वही पाठ याद रख सकते हैं जिसे उन्होंने असल में समझा हो। यदि कक्षा V के बच्चों को समझने में काफ़ी कठिनाई हो रही है तो हमें उनकी पढ़ने और समझने की क्षमता को सुधारने में मदद के लिए विशिष्ट गतिविधियों की योजना बनानी होगी।

एक सरल तरीक़ा यह हो सकता है कि जब शिक्षक अपनी कक्षाओं में पेपर को जाँचने / ग्रेड करने में जुटे हों तो बच्चे अपनी पसन्द की कोई भी पाठ्यपुस्तक या रीडिंग कॉर्नर से कोई किताब लेकर पढ़ सकते हैं। इसकी शुरुआत स्वयं के उदाहरण से हो सकती है। यानी, शिक्षक स्वयं किताब पढ़ते हैं, कहानी को अपने शब्दों में दोहराते हैं और उसे लिखते भी हैं। शिक्षक विषयवस्तु से 3–5 वस्तुनिष्ठ प्रकार के प्रश्न बना सकते हैं जो कक्षा के या उसके आस-पास के स्तर के विद्यार्थियों के लिए तैयार किए गए हों। कई शिक्षक ऐसे भी होते हैं जिनकी पढ़ने की आदत को बढ़ावा देने में रुचि नहीं होती है। ऐसा इसलिए, क्योंकि या तो उनकी पढ़ने की आदत छूट चुकी होती है या उन्होंने अपने स्कूली जीवन के दौरान इस आदत को विकसित ही नहीं किया होता। शिक्षक अपने-आप को पढ़ने की चुनौती दे सकते हैं जिसमें वह प्रतिदिन रीडिंग कॉर्नर से एक किताब लेकर पढ़ें, और 20 दिनों में 20 किताबें पढ़ने का लक्ष्य रखें। यह शिक्षक और रीडिंग कॉर्नर, दोनों के बारे में बच्चों की धारणा को सकारात्मक रूप से प्रभावित करेगा। प्रारम्भिक कक्षाओं के लिए तरीक़ा थोड़ा अलग हो सकता है, जहाँ हम 90 प्रतिशत बच्चों के लिए 15 दिनों के भीतर सरल वाक्य पढ़ने और लिखने का लक्ष्य रख सकते हैं। वह चित्रों और पाठ वाले थीम कार्ड पर ध्यान देते हुए राज्य द्वारा एफ़एलएन किट में प्रदान किए गए 100 से अधिक फ़्लैशकार्ड से पढ़ना और लिखना शुरू कर सकते हैं। जब विद्यार्थी शब्दों को लेकर सहज हो जाएँ तो हम उन शब्दों का इस्तेमाल करते हुए सरल वाक्य बना सकते हैं।

चित्र 5 : बिन्दियों वाला खेल और गिनना

जैसे– *यह एक आम है*, और फिर इस वाक्य में दूसरे फलों के नामों का प्रयोग कर सकते हैं।

> **समर कैम्पों से हमें जो भी अनुभव मिले हैं, वह बताते हैं कि आकलन से शिक्षण विधियों में सुधार होता है और अन्ततः, यह सीखने को प्रभावित करता है।**

जब शिक्षक इस प्रक्रिया का मार्गदर्शन करते हैं तो यह तरीक़ा पढ़ने और लिखने, दोनों को बढ़ावा देता है। इसी प्रकार, गणित में हम कक्षा के स्तर के आधार पर 2 से 4 अंकों तक की संख्याओं को विस्तारित करने पर ध्यान दे सकते हैं। इसके बाद स्थानीय मान, बुनियादी संक्रियाओं और इबारती सवालों की समझ विकसित कर सकते हैं। प्रत्येक बच्चे को बुनियादी संक्रियाओं में कम-से-कम 25 'इबारती सवाल' पूरे करने चाहिए, यानी कुल 100 सवाल। कल्पना कीजिए कि एक पुस्तिका में कक्षा 5 के 15 बच्चों द्वारा 15 से 20 दिनों में बनाए गए 1,500 'इबारती सवाल' हैं। किसी दूसरे प्रोजेक्ट में मापन और डेटा प्रबन्धन भी करवाया जा सकता है।

प्रत्येक कार्य वार्षिक परीक्षा से प्राप्त जानकारी से संचालित होना चाहिए। हमें प्रतिबद्धता के साथ आत्मनिरीक्षण करना चाहिए। हमने जिन कमियों की पहचान की है उन्हें पाटने के लिए हमें अपनी प्रक्रियाओं को बेहतर बनाने पर ध्यान देना चाहिए, न कि यह कि हम बच्चों को उन दक्षताओं के लिए दोषी मानें जिन्हें उन्होंने अभी हासिल ही नहीं किया है।

मुनीर पिछले 9 सालों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में कार्यरत हैं। उन्होंने अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी से एमए की शिक्षा प्राप्त की है। उन्हें सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली की गहरी समझ है और इसे बेहतर बनाने के लिए वह कटिबद्ध हैं।

सम्पर्क : muneer.c@azimpremjifoundation.org